www.jagran.com

अधिग्रहण ने बिगाड़ी खेती की गणित

जागरण संवाददाता, लखनऊ : शहर का दायरा दिनों दिन बढ़ रहा है। कृषि भूमि पर बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी हो रही हैं। यदि यह सिलसिला थमा नहीं तो कृषि उत्पादन में असंतुलन होगा। यह बातें भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कही।

वह रविवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में कृषि विज्ञान केंद्रों की वार्षिक कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। डॉ. सुशील सोलोमन ने कहा कि कृषि योग्य भूमि का अधिग्रहण को रोके जाने की जरूरत है। कहा कि खेती में बेहिसाब रसायन का इस्तेमाल किया जा रहा है, जो फसल को फायदा पहुंचाने के बजाय नुकसान कर रहा है। डीजल की बढ़ती कीमतों ने किसानों को परेशानी में डाल दिया है। यही वजह है किसानों के लिए कृषि उत्पादन घाटे का सौदा होता जा रहा है।

◆ भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में कार्यशाला

उदयपुर स्थित महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. राम प्रताप सिंह ने कहा कि विकसित गन्ना उत्पादन तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों की मदद से किसानों तक पहुंचाया जाएगा। साथ ही उप्र और उत्तराखंड में कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए गन्ना खेती को प्रचलित फसल उत्पादन प्रणाली में समेकित करने की जरूरत है। डॉ. आरपी सिंह ने कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को नई तकनीक से रूबरू करा रहे हैं। इससे फसल की पैदावार में बढ़ोत्तरी हो रही है।

हिन्दुस्तान लखनऊ •सोमवार •27 मई 2013

किसानों को नई तकनीक बताएं वैज्ञानिक

लखनऊ। कृषि वैज्ञानिकों को चाहिए कि वह किसानों को गुणवत्ता पूर्ण उत्पादन के लिए नई तकनीकी की जानकारी दें। मछली, बकरी पालन, सुअर पालन व साग सब्जी की ओर किसानों का ध्यान आकर्षित करें। इससे उत्पादन के साथ उन्हें रोजगार के नए अवसर भी मिलेंगे।

ये बातें रविवार को महाराजा प्रौद्योगिकी कृषि विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलपति डॉ. आरपी सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर रविवार को कहीं। इसका आयोजन भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान व कृषि विज्ञान केन्द्र के सहयोग से किया गया।

संस्थान के निदेशक एस. सोलोयन ने कहा कि धरती की क्षमता खत्म हो चुकी है। रसायनिक खादों से कृषि घाटे का व्यापार बन चुका है। हिसं

कल्पतरु एक्सप्रेस
www.kalptaruexpress.com
लखनऊ, सोमवार, 27 मई 2013

गोष्ठी

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक तीन दिवसीय कार्यशाला शुरू

गन्ना उत्पादकों को नई तकनीकों से अवगत कराएगा कृषि विज्ञान केन्द्र

कल्पतरु समाचार सेवा

पीजीआई, लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा विकसित गन्ना उत्पादन तकनीकों को कृषि विज्ञान केन्द्र की सहायता से किसानों तक पहुंचाया जाएगा। कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला के पहले दिन रविवार को आयोजित तकनीकी सत्रों में विचार-विमर्श के उपरांत यह बात रखी गई।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय तीन दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में प्रोफेसर डॉ.राम प्रताप सिंह, पूर्व कुलपति, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुशील सोलोमन, निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने किया। कार्यशाला में उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड के 81 केन्द्रों से लगभग 250 प्रतिनिधि/वैज्ञानिक हिस्सा ले रहे हैं। इन दो प्रदेशों में कृषि विकास के लिए किसानों को आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण तथा गन्ना आधारित फसल उत्पादन प्रणाली को बढ़ावा देकर उनकी आय बढ़ाने पर विचार-विमर्श किया गया।

कार्यशाला में डॉ.सुशील सोलोमन ने कहा कि शहरीकरण के कारण कृषि भूमि का तेजी से अधिग्रहण, खेती में असंतुलित कृषि रसायनों का प्रयोग, अधिक कृषि लागत, फसल कटाई उपरांत ह्रास एवं अन्य समस्याओं के कारण किसानों के लिए कृषि उत्पादन घाटे का सौदा साबित हो रहे हैं। जिस कारण किसान एवं श्रमिक तेजी से शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए गन्ना खेती को प्रचलित फसल उत्पादन प्रणाली में समेकित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस दिशा में उन्होंने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित उन्नत गन्ना प्रजाति, अन्तरालित प्रतिरोपण विधि, बडचिप व केन नोड तकनीक द्वारा गन्ना बीज संवर्द्धन सहित शरदकालीन एवं बसंतकालीन गन्ना के साथ दलहनी, तिलहनी तथा सब्जियों की उन्नत खेती तकनीक व जैव आधारित रोग प्रबंधन तकनीक तथा लागत बचत करने वाली गन्ना खेती मशीनों के उपयोग को आवश्यक बताया।

सत्र का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. आरपी सिंह ने कहा कि आज कृषि विज्ञान केन्द्रों को सिर्फ प्रसार की भूमिका ही नहीं निभाना है बल्कि किसानों को नई तकनीकों से परिचित करा फसल सघनता को बढ़ाकर उच्च कृषि उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करना भी है। जलवायु परिवर्तन के दौर में बदलती उत्पादन प्रणाली की आवश्यकता पर किसानों को जागरूक करना होगा।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने तकनीकी ने कहा कि तकनीकी हस्तांतरण प्रक्रिया को मजबूती प्रदान कर फसल उत्पादन तकनीकों को कम-से-कम समय में किसानों तक ले जाया जा सकता है। इस उद्देश्य से प्रदेश स्थित 08 कृषि विज्ञान केन्द्र अपने कार्यक्रमों में ''कर के सीखो'' तथा ''देखकर सीखो'' सिद्धांत को वृहत स्तर पर लागू करें।

कुशीनगर के किसान गन्ने के साथ लोबिया, अदरक, लहसन, प्याज तथा भिंडी की अन्तःफसली खेती कर अपनी आय को बढ़ा रहे हैं और इसमें कुशीनगर के कृषि विज्ञान केन्द्र का महत्वपूर्ण योगदान है। इस दिशा में अगले दो दिनों में विचार-विमर्श कर संस्थान एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के साथ साझा प्रसार एवं प्रदर्शन कार्यक्रम को चलाने पर सहमति होने की संभावना है। जिसका लाभ बहुत जल्द प्रदेश के गन्ना किसानों को मिलेगा। उद्घाटन सत्र का संचालन डा. दीक्षा जोशी ने किया तथा अतिथियों एवं प्रतिभागियों को डॉ. आरके सिंह, कार्यक्रम समन्वयक, केवीके, लखनऊ ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

जनसंदेश टाइम्स
लखनऊ, सोमवार 27 मई, 2013

किसानों को शीघ्र मिलेगी गन्ना उत्पादन की विकसित तकनीक : प्रो. सिंह

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में विकसित गन्ना उत्पादन की नवीनतम तकनीकों को कृषि विज्ञान केन्द्र की सहायता से किसानों तक पहुंचाया जायेगा। मौजूदा समय में कृषि विज्ञान केन्द्रों को सिर्फ प्रसार की भूमिका ही नहीं निभाना है, बल्कि किसानों को नयी तकनीकों पर शिक्षित कर फसल सघनता को बढ़ाकर उच्च कृषि उत्पादन

कार्यशाला

गन्ना अनुसंधान संस्थान में कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक कार्यशाला शुरू

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला में वार्षिक पत्रिका को जारी करते वैज्ञानिकगण

के लक्ष्य को प्राप्त करना होगा। साथ ही साथ बदलते जलवायु परिवर्तन के बारे समय-समय पर किसानों को वैज्ञानिकों की राय प्रदान करनी होगी।

यह बात रविवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में के सभागार में तीन दिवसीय कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर के पूर्व कुलपति प्रोफेसर राम प्रताप सिंह ने ने कही। इससे पूर्व उन्होंने कार्यशाला का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित करके किया। उन्होंने कहा कि देश की आधी से ज्यादा आबादी, अभी भी कृषि पर आधारित है। इसलिए परम्परागत कृषि प्रणाली को दरकिनार करके नवीनतम प्रणाली के अनुसार खेती बाड़ी करने की जरूरत है और तभी देश प्रगति के रास्ते पर अग्रसर हो पायेगा।

इस अवसर पर तकनीकी सत्र का संचालन कर रहे संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार साह ने कहा कि तकनीकी हस्तांतरण प्रक्रिया को मजबूती प्रदान कर फसल उत्पादन तकनीकों को कम से कम समय में किसानों तक ले जाया जा सकता है और इस उद्देश्य में प्रदेश स्थित 68 कृषि विज्ञान केन्द्र अपने कार्यक्रमों में 'करके सीखो' और 'देखकर सीखो' सिद्धांत को वृहत स्तर पर लागू करने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि कुशीनगर के किसान गन्ने के साथ लोबिया, अदरक, लहसन, प्याज तथा भिंडी की अन्तःफसली खेती कर अपनी आय को दुगुना से तिगुना कर रहे हैं। इसमें कुशीनगर के कृषि विज्ञान केन्द्र का महत्वपूर्ण योगदान है। इसी प्रकार गन्ना उत्पादन की अन्य तकनीकों को कृषि विज्ञान केन्द्र सघन रूप में अपने प्रदर्शन कार्यक्रम में सम्मिलित कर किसानों को लाभान्वित कर सकते हैं। इस दिशा में अगले दो दिनों में विचार-विमर्श कर संस्थान एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के साथ साझा प्रसार एवं प्रदर्शन कार्यक्रम को चलाने पर सहमति होने की संभावना है, जिसका लाभ बहुत जल्द प्रदेश के गन्ना किसानों को मिलेगा।

कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कहा कि देश एवं प्रदेश में शहरीकरण के कारण कृषि भूमि का तेजी से अधिग्रहण, खेती में असंतुलित कृषि रसायनों का प्रयोग, अधिक कृषि लागत, फसल कटाई उपरांत ह्रास एवं अन्य समस्याओं के कारण किसानों के लिए कृषि उत्पादन घाटे का सौदा होते जा रहा है, जिसके फलस्वरूप गांवों से किसान एवं श्रमिक तेजी से शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए गन्ना खेती को प्रचलित फसल उत्पादन प्रणाली में समेकित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस दिशा में उन्होंने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित उन्नत गन्ना प्रजाति, अन्तरालित प्रतिरोपण विधि, बडचिप व केन नोड तकनीक द्वारा गन्ना बीज संवर्द्धन, शरद कालीन एवं बसंत कालीन गन्ना के साथ दलहनी, तिलहनी तथा सब्जियों की उन्नत खेती तकनीक, जैव आधारित नाशीकीट एवं रोग प्रबंधन तकनीक तथा लागत बचत करने वाली गन्ना खेती मशीनों को वृहत स्तर पर किसानों के खेतों पर पहुंचाने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र की सकारात्मक भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। कार्यशाला का संचालन डॉ.दीक्षा जोशी ने किया। *वसं.*

कैनविज टाइम्स
6 सोमवार, 27 मई 2013
लखनऊ

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में कार्यशाला शुरू

किसानों तक पहुंचेगी गन्ना उत्पादन तकनीक

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ की ओर से विकसित गन्ना उत्पादन तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों की सहायता से किसानों तक पहुंचाने की पहल की जाएगी। इसके लिए संस्थान में रविवार को वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला की शुरुआत हुई। इसका उद्घाटन महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर के पूर्व कुलपति प्रोफेसर डॉ. रामप्रताप सिंह ने किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने की। कार्यशाला में उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड में स्थित 81 केंद्रों से लगभग 250 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। दोनों प्रदेशों में कृषि विकास के लिए किसानों की आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण तथा गन्ना आधारित फ सल उत्पादन प्रणाली को बढ़ावा देकर किसानों की आय बढ़ाने पर विचार-विमर्श किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. आरपी सिंह ने कहा कि आज कृषि विज्ञान केंद्रों को सिर्फ प्रसार की भूमिका ही नहीं निभानी है, बल्कि किसानों को नई तकनीकों पर शिक्षित कर फसल सघनता को बढ़ाकर उच्च कृषि उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करना होगा। जलवायु परिवर्तन के परिवेश में बदलती उत्पादन प्रणाली की आवश्यकता पर किसानों को जागरूक करना होगा।

डॉ. सुशील सोलोमन ने कहा कि देश एवं प्रदेश में शहरीकरण के कारण कृषि भूमि का तेजी से अधिग्रहण, खेती में असंतुलित कृषि रसायनों का प्रयोग, अधिक कृषि लागत, फसल कटाई के बाद ह्रास एवं अन्य समस्याओं के कारण किसानों के लिए कृषि उत्पादन घाटे का सौदा होता जा रहा है। इसके कारण किसान एवं श्रमिक तेजी से शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए गन्ना खेती को प्रचलित फ सल उत्पादन प्रणाली में शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस दिशा में उन्होंने संस्थान की ओर से विकसित उन्नत गन्ना प्रजाति, अंतरालित प्रतिरोपण विधि, बडचिप व केन नोड तकनीक द्वारा गन्ना बीज संवर्द्धन, शरदकालीन एवं बसंतकालीन गन्ने के साथ दलहनी, तिलहनी तथा सब्जियों की उन्नत खेती तकनीक, जैव आधारित नाशीकीट एवं रोग प्रबंधन तकनीक तथा लागत की बचत करने वाली गन्ना खेती मशीनों को व्यापक स्तर पर किसानों के खेतों तक पहुंचाने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र की, सकारात्मक भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने तकनीकी सत्र-एक का संचालन करते हुए कहा कि तकनीकी हस्तांतरण प्रक्रिया को मजबूती प्रदान कर फसल उत्पादन तकनीकों को कम से कम समय में किसानों तक ले जाया जा सकता है। इस उद्देश्य में प्रदेश स्थित 68 कृषि विज्ञान केंद्र अपने कार्यक्रमों में करके सीखो तथा देखकर सीखो सिद्धांत को लागू करें। उन्होंने कहा कि कुशीनगर के किसान गन्ने के साथ लोबिया, अदरक, लहसुन, प्याज तथा भिंडी की खेती कर अपनी आय को दोगुना से तीन गुना कर रहे हैं। इसमें कुशीनगर के कृषि विज्ञान केंद्र का महत्वपूर्ण योगदान है। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. दीक्षा जोशी ने किया तथा अतिथियों एवं प्रतिभागियों के प्रति डॉ. आरके सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्वतंत्र भारत

लखनऊ, सोमवार, 27 मई, 2013 (5)

किसानों तक पहुँचेगी आधुनिक तकनीक

लखनऊ (सं.) भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, द्वारा विकसित गन्ना उत्पादन तकनीकों को कृषि विज्ञान केन्द्र की सहायता से किसानों तक पहुँचाया जाएगा। इस बात का खुलासा कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला के पहले दिन आयोजित तकनीकी सत्रों में विचार-विमर्श के उपरांत हुआ। कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला का उद्घाटन मई २६, २०१३ को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में आज प्रोफेसर डा. राम प्रताप सिंह, पूर्व-कुलपति, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डा. सुशील सोलोमन, निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने किया। इस कार्यशाला में उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड में स्थित ८१ केन्द्रों से लगभग २५० प्रतिनिधि/वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। इन दो प्रदेशों में कृषि विकास के लिए किसानों की आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण तथा गन्ना आधारित फसल उत्पादन प्रणाली को बढ़ावा देकर किसानों की आय बढ़ाने पर आज विचार-विमर्श हुआ। डा. सुशील सोलोमन, निदेशक उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा कि देश एवं प्रदेश में शहरीकरण के कारण कृषि भूमि का तेजी से अधिग्रहण, खेती में असंतुलित कृषि रसायनों का प्रयोग, अधिक कृषि लागत, फसल कटाई उपरांत ह्रास एवं अन्य समस्याओं के कारण किसानों के लिए कृषि उत्पादन घाटे का सौदा होते जा रहा है जिस कारण किसान एवं श्रमिक तेजी से शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए गन्ना खेती को प्रचलित फसल उत्पादन प्रणाली में समेकित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस दिशा में उन्होंने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित उन्नत गन्ना प्रजाति, अन्तरालित प्रतिरोपण विधि, बडचिप व केन नोड तकनीक द्वारा गन्ना बीज संवर्द्धन, शरदकालीन एवं बसंतकालीन गन्ना के साथ दलहनी, तिलहनी तथा सब्जियों की उन्नत खेती तकनीक, जैव आधारित नाशीकीट एवं रोग प्रबंधन तकनीक तथा लागत बचत करने वाली गन्ना खेती मशीनों को वृहत स्तर पर किसानों के खेतों पर पहुँचाने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र की सकारात्मक भूमिका को महत्वपूर्ण तथा आवश्यक बताया।

इससे पहले सत्र का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि डा. आर.पी. सिंह ने कहा कि आज कृषि विज्ञान केन्द्रों को सिर्फप्रसार की भूमिका ही नहीं निभाना है बल्कि किसानों को नई तकनीकों पर शिक्षित कर फसल सघनता को बढ़ाकर उच्च कृषि उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करना होगा। जलवायु परिवर्तन के परिवेश में बदलते उत्पादन प्रणाली की आवश्यकता पर किसानों को जागरूक करना होगा। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. ए.के. साह तकनीकी सत्र-एक का संचालन करते हुए कहा कि तकनीकी हस्तांतरण प्रक्रिया को मजबूती प्रदान कर फसल उत्पादन तकनीकों को कम-से-कम समय में किसानों तक ले जाया जा सकता है और इस उद्देश्य में प्रदेश स्थित ६८ कृषि विज्ञान केन्द्र अपने कार्यक्रमों में ''कर के सीखो'' तथा ''देखकर सीखो'' सिद्धांत को वृहत स्तर पर लागू करें।

कुशीनगर के किसान गन्ने के साथ लोबिया, अदरक, लहसन, प्याज तथा भिंडी की अन्त:फसली खेती कर अपनी आय को दुगुना से तिगुना कर रहे हैं और इसमें कुशीनगर के कृषि विज्ञान केन्द्र का महत्वपूर्ण योगदान है। इसी प्रकार गन्ना उत्पादन की अन्य तकनीकों को कृषि विज्ञान केन्द्र सघन रूप में अपने प्रदर्शन कार्यक्रम में सम्मिलित कर किसानों को लाभान्वित कर सकते हैं। इस दिशा में अगले दो दिनों में विचार-विमर्श कर संस्थान एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के साथ साझा प्रसार एवं प्रदर्शन कार्यक्रम को चलाने पर सहमति होने की संभावना है। जिसका लाभ बहुत जल्द प्रदेश के गन्ना किसानों को मिलेगा। उद्घाटन सत्र का संचालन डा. दीक्षा जोशी ने किया तथा अतिथियों एवं प्रतिभागियों के प्रति डा. आर.के. सिंह, कार्यक्रम समन्वयक, के.वी.के., लखनऊ ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

the pioneer
LUCKNOW, MONDAY | MAY 27, 2013

KVKs to transfer cane tech to farmers

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

The sugarcane technology developed by the Indian Institute of Sugarcane Research (IISR) at Lucknow will now reach the farmers' doorsteps in no time through the Krishi Vigyan Kendra networks in Uttar Pradesh and Uttarakhand.

This was the crux of discussions on the opening day of the Krishi Vigyan Kendra (KVK) workshop at the IISR here on Sunday.

The annual workshop of Krishi Vigyan Kendras of zone IV was inaugurated by former Vice-Chancellor of MPUAT, Udaipur (Rajasthan), RP Singh. The inaugural session was chaired by IISR, Lucknow, Director, S Solomon.

All the directors (extension) of state agricultural universities in UP and Uttarakhand, project director of KVK zone IV and 200 representatives of 81 KVKs in UP and Uttarakhand are participating in the workshop to fine tune the TOT module for large-scale adoption of innovative agricultural production technology to improve agricultural economy.

In his presidential address, Dr Solomon said that due to the fast urbanisation of agricultural land, imbalanced use of chemicals, rising cost of cultivation, huge post-harvest losses and other problems, agriculture was no more economical and farmers were leaving farming. He stressed the need for integration of sugarcane cultivation with prevalent farming situations to strengthen agricultural economy in UP and Uttarakhand.

KVK workshop underway at IISR on Sunday Pioneer

It was felt that the sugarcane technology developed by IISR viz., high sugarcane variety, spaced transplanting, budchip and cane node technique for fast multiplication of healthy sugarcane seed, intercropping with autumn and spring cane, bio intensive management of pest and diseases, cost saving sugarcane machines should be adopted by farmers. It was also felt that the Krishi Vigyan Kendras (Farm Science Centres) should play a vital role in transfer of IISR's sugarcane technology to farmers.

Inaugurating the workshop, Dr Singh said that in today's complex agricultural production system, KVKs had to play a much bigger role to prove their worth towards achieving agricultural prosperity.

IISR's senior scientist AK Sah conducted the first technical session. He said "learning by doing" and "seeing is believing" should be the focal theme of the entire technology transfer programme of the 68 KVKs of UP.

He pointed out that the farmers in Kushinagar were earning 2-3 times more profit from inter-cropping of cowpea, ginger and okra with sugarcane and this success story should be replicated in other areas of UP and in Uttarakhand.

The inaugural session was conducted by IISR scientist Deeksha Joshi and the vote of thanks was proposed by KVK-IISR programme coordinator RK Singh.

अमर उजाला
लखनऊ, 27 मई 2013
My City

सीधे किसानों तक पहुंचे तकनीक

आईआईएसआर में तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। किसान विकास केंद्रों का काम सिर्फ किसानों को विभिन्न योजनाओं की जानकारी या सुझाव देना ही नहीं। बल्कि वैज्ञानिकों द्वारा तैयार की जा रही तकनीकों को भी सीधे किसानों तक पहुंचाना होना चाहिए। ये बातें रविवार को उप्र. व उत्तराखंड के 81 किसान विकास केंद्रों (केवीके) के 200 से अधिक वैज्ञानिक और प्रतिनिधियों ने कहीं। मौका था इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन टेक्नोलॉजी (आईआईएसआर) की तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला के पहले दिन का।

महाराणा प्रताप कृषि प्रौद्योगिकी विवि उदयपुर के पूर्व कुलपति प्रो. रामप्रताप सिंह ने बदलती जलवायु में फसलों को लेकर बरती जाने वाली सावधानियों की जानकारी किसानों तक पहुंचाने में केवीके को एक प्रमुख जरिया बताया। वहीं, उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता आईआईएसआर के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने की। उन्होंने बताया कि शहरों में बढ़ रहे पलायन के चलते ही छोटे किसानों के लिए खेती मुश्किल होती जा रही है। बताया कि खेतों में अनियंत्रित ढंग से रसायनों का उपयोग, कृषि भूमि का अधिग्रहण व बढ़ती लागत कुछ ऐसी समस्याएं हैं, जिनकी चलते किसान भारी नुकसान उठाने को मजबूर हैं। वहीं, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने बताया कि केवीके अब 'करके सीखो' और 'देखकर सीखो' की नीति पर काम करते हुए किसानों को तकनीकें समझाना शुरू करेंगे। इस सत्र का संचालन डॉ. दीक्षा जोशी ने और समन्वय डॉ. ओरके सिंह ने किया।

आईआईएसआर की कार्यशाला में मौजूद वैज्ञानिक।

केवीके बिल्डिंग का उद्घाटन आज : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एस अयप्पन भी वार्षिक कार्यशाला में शामिल होंगे। वे मंगलवार को आईआईएसआर में केवीके की नई बिल्डिंग का उद्घाटन करेंगे। वहीं, कार्यशाला के अगले दोनों दिन केवीके में खेती के प्रदर्शन कार्यक्रमों को शुरू करने पर चर्चा की जाएगी।

राष्ट्रीय
www.samaylive.com
सच कहने की हिम्मत
सहारा
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
• लखनऊ • नई दिल्ली • गोरखपुर • पटना • कानपुर • देहरादून • वाराणसी से प्रकाशित लखनऊ

किसानों को बताएं कृषि विज्ञान की नई तकनीक : डा. सिंह

सरोजनीनगर-लखनऊ(एसएनबी)। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर के पूर्व कुलपति डा. रामप्रताप सिंह ने कहा गन्ने के साथ लोबिया, प्याज व अदरक उगाकर किसान लाभ प्राप्त कर सकते हैं। डा. सिंह ने कहा कृषि में पैदावार से अधिक लागत आने के चलते किसान खेती-किसानी से मुंह मोड़ रहे हैं। ऐसे में कृषि विज्ञान केन्द्रों को सिर्फ प्रसार की भूमिका ही नहीं निभाना है बल्कि किसानों को नई तकनीकों परे शिक्षित कर फसल सघनता को बढ़ाकर उच्च कृषि उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करना होगा। डा. सिंह रविवार को रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित कृषि विज्ञान केन्द्रों की तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला के पहले दिन उद्घाटन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे।

▶ गन्ना अनुसंधान संस्थान में कार्यशाला का उद्घाटन

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. एस सोलोमन की अध्यक्षता में आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला के पहले दिन डा. सिंह ने कहा कि कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी हो रही है, लेकिन इसके साथ ही खेती में लागत उत्पादन से अधिक लग जाती है। संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने कहा कि देश एवं प्रदेश में शहरीकरण के कारण कृषि भूमि का तेजी से अधिग्रहण, खेती में असंतुलित कृषि रसायनों का उपयोग व अधिक कृषि लागत सहित अन्य समस्याओं के कारण किसानों के लिए कृषि घाटे का सौदा होती जा रही है जिसके चलते किसान एवं श्रमिक तेजी से शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। उन्होंने कृषि अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए गन्ना खेती की प्रचलित फसल उत्पादन प्रणाली को आवश्यक बताया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एके साह ने तकनीकी सत्र का संचालन करते हुए कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र अपने कार्यक्रमों में 'कर के सीखो' तथा 'देखकर सीखो' सिद्धांत को वृहत स्तर पर लागू करें। उन्होंने कहा कि कुशीनगर के किसान गन्ने के साथ लोबिया, अदरक, लहसुन, प्याज तथा भिंडी की अन्तःफसली खेती कर अपनी आय को दो से तीन गुना बढ़ा रहे हैं। उद्घाटन सत्र का संचालन डा. दीक्षा जोशी ने किया जबकि कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक डा. आरके सिंह ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।